संगीतनाटक
अकादेमी

2002-2003
संगीत नाटक अकादेमी
वार्षिक रिपोर्ट

2002-2003
संगीत नाटक अकादेमी
वार्षिक रिपोर्ट

विषय सूची

परिशिष्ट

प्रबंधात्मक गठन

संगीत नाटक अकादेमी - संगीत, नृत्य और नाटक की राष्ट्रीय अकादेमी की स्थापना वर्ष 1953 में भारत की प्रदर्शनकारी कलाओं को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए की गई थी। इस कार्य के लिए अकादेमी राज्यों की प्रतिस्थानी संगीत नाटक अकादेमियों और देशभर में फैले स्वैच्छिक संगठनों को सहयोग प्रदान करती है। प्रायोजना, अनुसंधान और प्रसार के द्वारा अकादेमी संगीत,नृत्य और नाटक के प्रति सामान्य जनों की अभिरूचि को बढ़ावा देती है और भारतीय प्रदर्शनकारी कलाओं की सर्वत्र श्रीवृद्धि के लिए विचारों और तकनीकों का तात्कालिक आदान-प्रदान करती है। अकादेमी के उद्देश्यों का और अधिक विस्तृत उल्लेख अकादेमी के संगम-ज्ञापन (उद्धरण : परिशिष्ट-1) में किया गया है। अकादेमी ने अपने पचास वर्ष 28 जनवरी 2003 को पूरे किए। वर्ष भर चलने वाले स्वर्ण जयंती महोत्सव कार्यक्रमों का उद्घाटन दिल्ली में भारत के राष्ट्रपति महामहिम डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने किया।

संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष डा. भूपेन हजारिका और उपाध्यक्ष श्री श्यामानंद जालान हैं। संगीत नाटक अकादेमी का प्रबंध उसकी महापरिषद में निहित है। अकादेमी के कार्यो का सामान्य अधीक्षण, निदेशन और नियंत्रण कार्यकारिणी मंडल द्वारा किया जाता है जिसकी सहायता के लिए वित्त समिति, अनुदान समिति, प्रकाशन समिति और अन्य सलाहकार समितियाँ यथा संगीत, नृत्य, रंगमंच, प्रलेखन और अभिलेखन आदि हैं। महापरिषद, कार्यकारिणी मंडल और अन्य समितियों के सदस्यों की सूची परिशिष्ट-2 में दी गई है।

अकादेमी के सचिव और प्रधान कार्यकारी अधिकारी श्री जयंत कस्तुआर हैं। उनकी सहायता के लिए संगीत, नृत्य, नाटक, समन्वय, वित्त, प्रशासन, प्रकाशन, प्रलेखन, फिल्म के उपसचिवों के साथ अकादेमी के पुस्तकालयाध्यक्ष, तथा अकादेमी की घटक इकाइयों — कथक केन्द्र और जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य एकेडमी के निदेशक हैं। नई दिल्ली स्थित कथक केन्द्र और जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य एकेडमी, इम्फाल पारम्परिक नृत्य की प्रशिक्षण संस्थाएँ हैं। इन दोनों संस्थाओं का प्रबंधन अकादेमी के कार्यकारिणी मंडल के हाथ में है और इस कार्य में उसकी सहायता के लिए इन दो घटक इकाईयों की सलाहकार समितियाँ है। दिल्ली स्थित रवीन्द्र रंगशाला अकादेमी की तीसरी घटक इकाई है जिसे अकादेमी ने वर्ष 1993 में अपने अधिकार में लिया था। इन संस्थाओं के क्रियाकलापों की रिपोर्ट प्रस्तुत रिपोर्ट में दी गई हैं।

रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान महापरिषद, कार्यकारिणी मंडल और कार्यकारिणी मंडल द्वारा गठित विभिन्न समितियों यथा - वित्त समिति, अनुदान समिति और प्रकाशन समिति की बैठकें आयोजित की गयीं। संगीत,नृत्य, नाटक आदि की सलाहकार समितियों, कथक केन्द्र और जवाहरलाल नेहरू मणिपुर नृत्य एकेडमी की सलाहकारी बैठकें भी आयोजित की गईं। इन बैठकों की सूची परिशिष्ट - 3 में दी गई है।

अकादेमी सम्मान

सम्मान समारोह एवं महोत्सव

2001 का सम्मान समारोह 3 अप्रैल, 2002 को असम सरकार के संस्कृति विभाग के सहयोग से गुवाहाटी के श्रीमतं शंकर देव कलाक्षेत्र में आयोजित किया गया था।

सम्मान समारोह, असम के राज्यपाल ले. जनरल एस.के. सिन्हा (सेवानिवृत्त), पी. वी.एस.एम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। राज्यपाल महोदय ने प्रख्यात कलाकारों, संगीतकारों नाट्यकारों और विद्वानों को भारत की प्रदर्शन कलाओं के क्षेत्र में उनके असाधारण योगदान के लिए तीन कलाकारों को रत्न सदस्यता से सम्मानित किया एवं पच्चीस अन्य कलाकारों को अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया। सम्मान समारोह के बाद गुवाहाटी के रवीन्द्र भवन में 4 से 9 अप्रैल तक एक उत्सव का आयोजन किया गया।

संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष डा. भूपेन हजारिका ने समारोह में उपस्थित विशिष्ट जनों का स्वागत किया और उद्घाटन भाषण दिया। उपस्थित विशिष्ट जनों में 'असम के मुख्यमंत्री तरूण गोगोई, हरियाणा के राज्यपाल भाई प्रभु परमानन्द और संगीत नाटक अकादेमी के 'रत्न सदस्य', 'भारत रत्न' उस्ताद बिसमिल्लाह खान शामिल थे।

संगीत नाटक अकादेमी के सचिव श्री जयन्त कस्तुआर ने रत्न सदस्यों और सम्मानित कलाकारों को 'प्रशस्ति-पत्र' प्रदान किए और उपाध्यक्ष श्री श्यामानन्द जालान ने धन्यवाद भाषण दिया। इसके बाद , उस्ताद बिसमिल्लाह खान का शहनाई वादन हुआ।

रत्न सदस्यों एवं सम्मानित कलाकारों में से कुछ महानुभावों द्वारा अपनी कलाओं के प्रदर्शन से सराबोर, 4 से 9 अप्रैल तक पूरे सप्ताह चलने वाला समारोह गुवाहाटी के रवीन्द्र भवन में सम्पन्न हुआ। एक रिपोर्ट के अनुसार करीब पाँच हजार से ज्यादा कला प्रेमियों ने समारोह का आनन्द लिया और यह अकादेमी द्वारा अब तक आयोजित किए गए सबसे सफल सम्मान समारोहों में से एक था। इस सप्ताहभर चले समारोह के प्रति पूरे गुवाहाटी के लोगों में रोमांच एवं दिलचस्पी सुस्पष्ट थी और इस समारोह को न सिर्फ असम में बल्कि पूरे उत्तर-पूर्व के मीडिया में व्यापक रूप से कवर किया गया। प्रदान किए गए 25 सम्मानों में से 5 उत्तर-पूर्व क्षेत्र के कलाकारों को प्राप्त हुए।

विगत वर्षो में अकादेमी के वार्षिक सम्मान समारोह मुख्यत: दिल्ली में एवं अन्य शहरों जैसे मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, बंगलौर, जयपुर, लखनऊ, भुवनेश्वर एवं हैदराबाद में आयोजित किए गए थे। उत्तर-पूर्व का प्रवेशद्वार कहे जाने वाले गुवाहाटी में पहली बार अकादेमी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। यह अकादेमी द्वारा उत्तर-पूर्वी भारत में की गयी नयी शुरूआत का अंग था। सन् 2000 एवं 2001 में अकादेमी ने गणतंत्र महोत्सव के एक अंग के रूप में संगीत एवं नृत्य के प्रमुख समारोहों का आयोजन गुवाहाटी, शिलांग, अगरतला, इम्फाल और गंगटोक में किया था। गणतंत्र महोत्सव का समापन, अक्तूबर, 2001 में सिक्किम में संगीत एवं नृत्य के उत्सव के साथ हुआ था।

महोत्सव कार्यक्रम का विवरण निम्नलिखित है :

4 अप्रैल, 2002
हरिद्वारमंगलम ए.के. पलनिवेल, *तविल*
एम.बालमुरली कृष्ण, *कर्नाटक गायन संगीत*
वेमपटि चिन्ना सत्यम /श्री कृष्णा पारिजातम, *कुचिपुड़ि*

5 अप्रैल
चारू सिजा माथुर, *मणिपुरी नृत्य*
प्रतिभा प्रहलाद, *भरतनाट्यम*
घण कांत बरा, *सत्रिय*

7 अप्रैल
कॉमिक खाँगजिरेम, मेघालय का लोक संगीत
खुड़े पतुआर रूपकथा (पुतुल नाट्य)
निर्देशक: हिरेन भट्टाचार्य
प्रस्तुति: पीपल्स पपेट थियेटर, कोलकाता

8 अप्रैल
सीढ़ियाँ (हिन्दी नाटक)
निर्देशक: दया प्रकाश सिन्हा
प्रस्तुतकर्त्ता : स्नेह भारती, दिल्ली

9 अप्रैल
गोकुल निर्गमन (कन्नड़ नाटक)
निर्देशक: बीव़ी.कारंत
नाट्यकार : पु.थी. नरसिम्हाचार

सम्मान 2002

25 मार्च 2003 को अकादेमी के महापरिषद की मुम्बई में बैठक हुई। इसमें वर्ष 2002 के अकादेमी 'रत्न सदस्यता' और 'सम्मान' के लिए प्रदर्शन कलाओं में 28 प्रख्यात कलाकारों का चयन किया गया। संगीत नाटक अकादेमी की रत्न सदस्यता और सम्मान में 40,000 रूपये नकद, एक शाल और एक ताम्रपत्र प्रदान किए जाते हैं। वर्ष 2002 के रत्न सदस्यों और सम्मान विजेताओं के नाम निम्नलिखित हैं :

अकादेमी रत्न सदस्य

शन्नो खुराना
कावालम नारायण पनिक्कर

अकादेमी सम्मान (2002)

संगीत

शरयू कालेकर, *हिन्दुस्तानी संगीत (गायन)*
सुशिलाराणी बाबूराव पटेल, *हिन्दुस्तानी संगीत (गायन)*
सुरेश भास्कर गायतोंडे, *हिन्दुस्तानी संगीत (वाद्य - तबला)*
अनिन्दो चटर्जी, *हिन्दुस्तानी संगीत (वाद्य -तबला)*
टी. आर सुब्रह्मण्यम्, *कर्नाटक संगीत (गायन)*
इ. वसन्तशोभा गायत्री, *कर्नाटक संगीत (वाद्य वीणा)*
येल्ला वेंकटेश्वर राव, *कर्नाटक संगीत (वाद्य -मृदंगम)*
के.पी. उदयभानु, *सृजनात्मक संगीत*

नृत्य

मालविका सरूक्कै, *भरतनाट्यम्*
राजेन्द्र कुमार गंगानी, *कथक*
खुलेम ओंगबी लैपाकलोतपी देवी, *मणिपुरी*
किरण सैगल, *ओडिसी*
शम्भू भट्टाचार्य, *सृजनात्मक नृत्य*

रंगमंच

अरूण मुखर्जी, *निर्देशन*
सतीश आनंद, *निर्देशन*
निरंजन गोस्वामी, *अभिनय (मूक)*
निसार मोहमदअली अलाना, *रंग शिल्प*
अशोक सागर भगत, *प्रकाश परिकल्पना*

पारम्परिक/लोक/जनजातीय संगीत/नृत्य/रंगमंच एवं पुतुलनाट्य

दिलीप शर्मा एवं *ज्योति संगीत, असम*
श्रीमती सुदक्षिणा शर्मा, *(संयुक्त पुरस्कार)*
चाओबल सिंह, *दुहर चोलम*, (नट संकीर्तन), मणिपुर
सेंग्यूसेंग सेंग्यूबा पौंगेनेर, *पारम्परिक नृत्य, नागालैंड*
जागीर सिंह, *गुरबाणी*, पंजाब
एस. नटराजन, *भागवतमेला - तमिलनाडु*

रंगमंच में समग्र योगदान

जितेन्द्र नाथ कौशल
रोमेश चन्दर

संगीत नाटक अकादेमी स्वर्ण जयंती

भारत के राष्ट्रपति महामहिम डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने 28 जनवरी, 2003 को नई दिल्ली के सिरि फोर्ट सभागार में संगीत नाटक अकादेमी के स्वर्ण जयंती समारोह का उद्घाटन किया। उद्घाटन के बाद हुए तीन दिवसीय महोत्सव में अग्रणी संगीतकारों, नृत्य कलाकारों एवं नाट्यकारों, निर्देशकों ने अपनी कलाओं का प्रदर्शन किया, ये सभी अकादेमी के रत्न सदस्य हैं।

उद्घाटन के समय बन्दनवार, बैनर आदि से सुसज्जित सिरिफोर्ट सभागार में उत्सव सा माहौल लग रहा था। साथ ही रंगशाला में उन फोटोग्राफ को प्रदर्शित किया गया था जिनसे संगीत नाटक अकादेमी की गतिविधियों की झलक, इसकी स्थापना दिवस (28 जनवरी 1953) से ही मिलती थी।

दिल्ली के इंटरनेशनल सेंटर फॉर कथकली के संगीतकारों ने पंचवाद्यम् के वादन से राष्ट्रपति जी की आगवानी की। मंच का माहौल तब जीवंत हो उठा जब अकादेमी के तेरह विशिष्ट रत्नसदस्यों ने ढोल एवं मोहुरी वादन के बीच मंच पर अपना -अपना स्थान ग्रहण किया। ढोल एवं मोहुरी वादन, पूर्वी भारत की छऊ नृत्य परंपरा का समर्थन करने वाली अकादेमी की परियोजना से संबद्ध कलाकारों एवं प्रशिक्षुओं द्वारा प्रस्तुत किया गया।

महामहिम राष्ट्रपति के बाद बारी- बारी से अकादेमी के रत्न सदस्यों ने भी मंच पर स्वर्ण जयन्ती के प्रतीक 50 दीपों को प्रज्वलित किया। इसी के साथ मणिपुर के पुंग ढोल वादन; तमिलनाडु के नागस्वरम् एवं केरल के मिझाव वादन की धुन से सभागार गूँज उठा। इस सुअवसर के लिए विशेष रूप से बनायी गयी संगीत रचना 'गोल्डन शावर्स' वीणा वादन से 'सप्त वीणा एन्सेम्बल', बंगलौर के महिला कलाकारों ने दर्शकों को मंत्र मुंग्ध कर दिया।

महामहिम राष्ट्रपति जी ने अकादेमी के रत्न सदस्यों प. रवि शंकर, उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ, इब्राहिम अल्काजी, वेदांतम सत्यनारायण शर्मा, डा. कपिला वात्स्यायन, कोमल कोठारी, केलूचरण महापात्र, मृणालिनी विक्रम साराभाई, अम्मान्नूर माधव चाक्यार, बादल सरकार, पं. बिरजू महाराज, विजय तेंडूलकर एवं डा. एम. बालमुरली कृष्ण का अभिनन्दन किया और शॉल (अंगवस्त्रम्) तथा स्वर्ण जयंती स्मृति चिन्ह भेंट किया। अकादेमी के सभी रत्न सदस्यों की ओर से पं. रवि शंकर ने संगीत नाटक अकादेमी को उसके द्वारा किए गए कार्यों के लिए धन्यवाद दिया। मंच पर प्रख्यात कलाकारों की उपस्थिति से अभिभूत होकर राष्ट्रपति महामहिम कलाम ने कहा, 'मैं करीब हर दिन इन कलाकारों

की प्रस्तुतियों के बारे में सुनता हूँ। जब मैं अपने सामने इन सम्मानित कलाकारों के समूह को देखता हूँ तो मुझे ऐसा महसूस होता है जैसे मैंने सूर्य का चक्कर 72 बार लगाया हो पर फिर भी 71 वर्षों के अपने जीवन काल में मैंने इतना खुश एवं गौरवान्वित अनुभव नहीं किया जितना कि ऐसे कलाकारों के समूह की उपस्थिति में आज कर रहा हूँ।'

पचास वर्ष पहले जिन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अकादेमी की स्थापना की गयी थी उन अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए राष्ट्रपति जी ने अकादेमी को बधाई दी। डा. कलाम ने कहा 'मैं यहाँ उपस्थित महान कलामर्मज्ञों से यह अनुरोध करना चाहूँगा कि वे भारत को एकता के सूत्र में बाँधने वाला ऐसा गीत गाएँ जो मस्तिष्क एवं आत्मा को एक कर दे'।

उदघाटन समारोह की अध्यक्षता केन्द्रीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जगमोहन तथा पर्यटन एवं संस्कृति राज्यमंत्री श्री विनोद खन्ना ने की। अकादेमी के अध्यक्ष डा. भूपेन हजारिका ने अपने संबोधन भाषण में अकादेमी के विगत 50 वर्षों के विकास का विवरण दिया। उन्होंनें कहा 'अब हम अपने अतीत में झाँक सकते है और अपने उद्देश्यों का ध्यान कर सकते हैं तथा देश की संस्कृति को परिरक्षित करने के अपने प्रयासों को जारी रख सकते हैं।'

अभिनन्दन समारोह का समापन अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री श्यामानन्द जालान के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

इन संबोधनों के बाद एक संक्षिप्त कार्यक्रम आयोजित किया गया। राजस्थान के लंगा एवं मंगणियार समुदाय के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रम ने राष्ट्रपति जी को सबसे ज्यादा अभिभूत किया। प्रस्तुति के तत्काल बाद वे सुरक्षा घेरे से बाहर निकलकर मुख्य गायक को बधाई देने मंच पर गए और तब शीघ्र ही उत्साह से सराबोर बच्चों ने उन्हें घेर लिया। ये बच्चे राष्ट्रपति जी के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेने के लिए उतावले हुए जा रहे थे। राष्ट्रपति जी ने वरिष्ठ कलाकारों एवं अकादेमी से देश में युवा प्रतिभाओं को तराशने का अनुरोध किया।

उद्घाटन समारोह के दूसरे सत्र में भारत रत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खान ने शहनाई वादन प्रस्तुत किया । महोत्सव के दूसरे दिन एम. बालमुरली कृष्ण ने कर्नाटक गायन, बिरजू महाराज ने कथक एवं बादल सरकार ने अपनी ही लिखी और निर्देशित बांग्ला लघु नाटिका प्रस्तुत की।

महोत्सव के अंतिम दिन केलूचरण महापात्र द्वारा ओडिसी नृत्य ; मृणालिनी साराभाई द्वारा अपने नृत्य जीवन का अभिनययुक्त वृतान्त तथा वेदांतम् सत्य नारायण शर्मा द्वारा कुचिपुड़ि नृत्य प्रस्तुत किए गए।

कार्यक्रम का विवरण निम्नलिखित है :

कार्यक्रम

मंगलवार, 28 जनवरी

उद्घाटन

राष्ट्रगान

स्वागतगान

ऋग्वेद तथा संगीत रत्नाकर के मंत्र

संगीत नाटक अकादेमी के अध्यक्ष डा. भूपेन *हजारिका द्वारा स्वागत* **भाषण**

माननीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री जगमोहन द्वारा अभिवादन

दीप प्रज्वलन

गोल्डन शावर्स - वीणा वादन

महामहिम राष्ट्रपति तथा माननीय पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री को स्वर्ण जयंती स्मृति चिन्ह भेंट

भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा अकादेमी के रत्न सदस्यों का अभिनन्दन

पंडित रवि शंकर, उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ, श्री इब्राहीम अल्काजी, श्री वेदांतम सत्यनारायण शर्मा, डॉ.कपिला वात्स्यायन, श्री सेम्मंगुडी आर. श्रीनिवास अय्यर, श्री कोमल कोठारी, गुरु केलुचरण महापात्र, श्रीमती मृणालिनी विक्रम साराभाई, गुरु अम्मान्नूर माधव चाक्यार, श्री बादल सरकार , पंडित बिरजू महाराज, श्री विजय तेंडूलकर, डॉ.एम. बालमुरली कृष्ण, गुरु वेम्मपटि चिन्न सत्यम

भारत के राष्ट्रपति महामहिम डा.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा सम्बोधन

पारम्परिक राजस्थानी गीत द्वारा अभिवादन

संगीत नाटक अकादेमी के उपाध्यक्ष श्यामानन्द जालान द्वारा धन्यवाद ज्ञापन

भारत रत्न और अकादेमी के रत्न सदस्य उस्ताद *बिस्मिल्लाह खाँ द्वारा शहनाई वादन*

बुधवार, 29 जनवरी

श्री बादल सरकार द्वारा लिखित एवं निर्देशित

लघु नाटिका

द्वैरथ

डा. एम बालमुरली कृष्ण द्वारा *कर्नाटक गायन*

पंडित बिरजू महाराज द्वारा *कथक नृत्य*

बृहस्पतिवार 30 जनवरी

श्री वेदांतम् सत्यनारायण शर्मा द्वारा *कुचिपुड़ि नृत्य*

श्रीमती मृणलिनी सारांभाई द्वारा *नृत्य अनुभवों पर 'स्पोकन थॉट्स'*

गुरू केलुचरण महापात्र द्वारा *ओडिसी नृत्य*

महोत्सव/कार्यशाला/प्रदर्शनी

वाद्य दर्शन

वाद्य यंत्रों का संगम

22 से 26 जुलाई 2002

कार्यक्रमों की वाद्य दर्शन श्रंखला का आयोजन अकादमी ने वाद्यन्यंत्रों की विविधता का प्रचार-प्रसार करने के लिए एवं भारत की सांगीतिक परम्परा में इनकी भूमिका एवं प्रकार्य का अन्वेषण करने के लिए किया है। इस श्रृंखला के तहत पहला कार्यक्रम, मार्च 2002 में, नई दिल्ली में आयोजित किया गया था, जिसमें वाद्ययंत्रों के निर्माण संबंधी कला एवं कौशल पर व्याख्यान-निदर्शन की भी व्यवस्था की गयी थी।

इस श्रृंखला के तहत दूसरा कार्यक्रम दिल्ली में 22 से 26 जुलाई 2002 तक आयोजित किया गया था, जिसमें कम प्रचलित पारम्परिक वाद्ययंत्रों पर संगोष्ठी हुई तथा इन वाद्ययंत्रों का वादन भी प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में सारंगी, नागस्वरम एवं परवावज एवं अन्य ऐसे वाद्यन्यंत्रों पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया था जिनके श्रोताओं की संख्या घटती जा रही है तथा जिनका प्रचलन कम हो रहा है। इस कार्यक्रम में कई विद्वानों, शिक्षाविदों एवं संगीतज्ञों ने भाग लिया। दर्शकों ने कई प्रख्यात् संगीतकारों की आह्लादक कला प्रस्तुतियों का आनन्द लिया। कार्यक्रम का विवरण निम्नलिखित है :

22 जुलाई 2002
असद अली खान: रूद्र वीणा
संगतकार: दालचंद शर्मा: परवावज

23 जुलाई, 2002
प्रमोद गायकवाड: सुंदरी
चित्रवीणा एन रविकिरण: चित्रवीणा
संगतकार: दिल्ली सुंदर राजन: वायलिन
उमायलपुरम के. शिवरमण : मृदंगम
ई.एम.सुब्रह्मण्यम्: घटम्

24 जुलाई, 2002
अनंत लाल: शहनाई
राम आशिष पाठक: परवावज

25 जुलाई 2002
थीरूविजा जयशंकर: नागस्वरम
संगतकार: वेलयापट्टी ए.आर. सुब्रह्मण्यम: तविल
इ. गायत्री: वीणा
संगतकार : मादिरी मंगलम स्वामीनाथन - मृदंगम
इ.एम. सुब्रह्मण्यम -घटम

26 जुलाई 2002
राम नारायण - सारंगी
संगतकार : हर्ष नारायण - सारंगी
सुभाष निर्वाण - तबला

संगोष्ठी

कार्यक्रम के आयोजन के दौरान, नई दिल्ली के त्रिवेणी चैम्बर थियेटर में एक संगोष्ठी आयोजित की गयी थी। संगोष्ठी सत्रों में निम्नलिखित पर ध्यान केन्द्रित किया गया:

रूद्र वीणा
अध्यक्ष : प्रो. एस.के.सक्सेना
प्रतिभागी: उस्ताद अली खान, श्री मुरारी मनोहर अधिकारी, उस्ताद फहीमुद्दीन डागर

रबाब एंड सुरसिंगार
अध्यक्ष : श्री बुद्धदेव दासगुप्ता
प्रतिभागी: श्री सोमजीत दासगुप्ता, श्री अनिन्द्य बनर्जी

विचित्र वीणा एंड चित्र वीणा
अध्यक्ष : श्री एम.जी.स्वामीनाथन
प्रतिभागी : श्री गोपाल कृष्ण, श्री एन. नरसिम्हन अयंगर, श्री रवि किरण, श्री मुस्तफा रजा .

वीणा
अध्यक्ष: श्री एन.रामनाथन
प्रतिभागी : श्री कराइकुडी सुब्रह्मण्यम, श्री आर.विश्वेश्वरम, डॉ. आर.कौशल्या, डॉ. सूमा सुधीन्द्र।

सुरबहार
अध्यक्ष : पं. देबू चौधरी
प्रतिभागी : प्रो. संतोष बनर्जी

नगाड़ा, दुक्कड़, तविल एंड गट्टूवाद्यम
अध्यक्ष : श्री उमायलपूरम के.शिवरमन
प्रतिभागी : श्री वलयपट्टी ए.आर.सुब्रह्मण्यम, **श्री मदन लाल, श्री एन.श्रीनिवासन,** श्री एच. सुब्रह्मण्यम

डबल रीडेड इन्स्ट्रूमेंट्स
शहनाई, सुंदरी एंड नागस्वरमद्ध
अध्यक्ष : श्री कोमल कोठारी
प्रतिभागी: श्री अनन्त लाल के साथ श्री दयाशंकर, **श्री थिरूवजा जयशंकर, श्री** कृष्णराम चौधरी, श्री प्रमोद गायकवाड

परवावज
अध्यक्ष : डा. अबन ई. मिस्त्री
प्रतिभागी : पं.रामाशीष पाठक, श्री गोपालदास, श्री भागवत उप्रेती,

सारंगी, इसराज, दिलरूबा एंड सुरसागर
अध्यक्ष: डा.एन.राजम
प्रतिभागी : श्री बुद्धदेव दास गुप्ता, श्री अल्लाद्दीन खान, श्री मुहम्मद अली, उस्ताद सबीर खान।

वाद्य यंत्रों के निर्माण संबंधी समस्याओं पर हुए विमर्श की अध्यक्षता श्री भास्कर चन्दावरकर ने की। प्रतिभागी थे -श्री बिशनदास शर्मा, डॉ. स्वर्णलता राव, श्री ओ.पी.प्रहलादका, श्री लोकनाथ शर्मा, डॉ. सुनीरा कासलीवाल।

बृहद्देशी संगीत महोत्सव

उत्तरी भारत के क्षेत्रीय संगीत परम्पराओं का उत्सव एवं संगोष्ठी

27 - 31 अक्तूबर, 2002

संगीत नाटक अकादेमी ने देश के विभिन्न भागों में बृहद्देशी संगीत महोत्सव समारोहों की शृंखला आयोजित की है। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों की संगीतमय परंपराओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इस श्रृंखला के तहत पहला आयोजन पुणे में किया गया जिसमें महाराष्ट्र, गुजरात, गोवा एवं राजस्थान की चुनिन्दा सांगीतिक परंपराओं को एक साथ प्रदर्शित किया गया। चेन्नई में आयोजित समारोह में तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश एवं केरल के विभिन्न अभिनय रूपों की प्रस्तुति की गयी। इसी शृंखला के तहत गुवाहाटी में आयोजित तीसरे समारोह में मणिपुर, असम, त्रिपुरा, नागालैंड, अरूणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम एवं सिक्किम आदि उत्तर-पूर्व क्षेत्र की संगीत परंपराओं को केंद्रीभूत किया गया।

चंडीगढ़ में 27 से 31 अक्तूबर 2002 तक आयोजित चौथे समारोह में जम्मू एवं कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, हरियाणा एवं पंजाब की संगीत परंपराओं का प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम को चंडीगढ.प्रशासन के जन संपर्क निदेशालय एवं पटियाला स्थित उत्तर क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से आयोजित किया गया था। इस समारोह का उद्घाटन पंजाब के माननीय राज्यपाल महामहिम लेफ्टीनेन्ट जनरल (सेवानिवृत्त) जे.एफ.आर जैकब ने किया। प्रो. आत्मजीत सिंह, श्री बलवन्त ठाकुर, प्रो. नन्द लाल गर्ग, श्री कमल तिवारी एवं श्री विजय शंकर चौधरी ने इस समारोह में भाग लिया और इसकी सफलता में योगदान दिया। इस समारोह में विभिन्न कला प्रस्तुतियों के साथ उत्तर भारत के संगीत पर संगोष्ठी भी आयोजित की गयी। कार्यक्रम का विवरण निम्नलिखित है :

कार्यक्रम

27 - 30 अक्तूबर, 2002

कला भवन, पंजाब आर्टस कौंसिल, **चंडीगढ़**

27 अक्तूबर

उद्‌घाटन

देव यात्रा - वाद्ययंत्रों का प्रसरण : बलदेव चौहान

पंजाब/जम्मू एवं कश्मीर

गुरबाणी : भाई अवतार सिंह रागी

सूफियाना कलाम : गुलाम मोहम्मद साज़नवाज़ एवं मो. **याकूब** शेख

भाखन : कृष्णा कुमारी एवं प्रद्युम्न सिंह

चक्री : गुलज़ार गनइ

जुगनी : गुरमीत बावा

28 अक्तूबर

जम्मू एवं कश्मीर

सुरनइ एंड दमन : अब्दुल अजीज भट

बुद्धिस्ट चैंट्स एवं मोनास्टिक म्यूजिक : **रेव सेरिंग चोस्पेल**

करकन : गिरधारी लाल

दास्ताँ : इस्माइल मीर

छींजन : किशन सिंह

साँग्स ऑफ लद्दाख : मिरूप नंमग्याल एवं सेरिंग **डोलकर**

हिमाचल प्रदेश

नौपाद (नगाड़ा, ढोल, शहनाई) : लच्छी राम

ट्रेडिशनल साँग्स ऑफ चम्बा एवं कांगड़ा : रोशन लाल

भारनुआ : साँग्स ऑफ शिमला एवं बिलासपुर - कृष्णा कुमारी

बेल वादन - श्याम लाल

फोक साँग्स ऑफ मंडी एवं कुल्लू रिजन - ज्वाला प्रसाद

ट्राइबल साँग्स एंड इंस्ट्रूमेंट्स फ्राम किन्नौर - नेगी

नटी साँग्स ऑफ महसू/सिरमौर - सुनीता देवी

29 अक्तूबर

उत्तरांचल

हुडक्का वादन एंड रामोला सिंगिंग : हरदा **सूरदास**

चंचरी एंड न्यौली गीत - गोकुल सिंह

ढोल वादन - सोहन लाल

बेदा - बेदी : शिव चरण और वचन देई

हुडक्का, डौर थाली एंड बिणाई - राम चरण **जुआल**

रंग-बंग-लोक कला केन्द्र, दोरकोट

वीरगाथा गायन - झुसिया दमाई

हरियाणा

नगाड़ा - झम्मन खान एवं मम्मन खान (सारंगी)

साँग्स फ्रॉम सांग - तुले राम

द साँग ट्रेडिश्नस ऑफ ब्रज रिजन - पटका रसिया **सिब्बन सिंह**

द साँग ऑफ मेवात रिजन - असगर हुसैन

शैवाइट/(जंगम) साँग्स - सूरज भान

30 अक्तूबर

पंजाब

सांग्स ऑफ ढाढ़ी - भाई दया सिंह दिल**बर एवं देशराज लचकानी**

द साँग्स ऑफ मालवा रिजन

(कविश्री) - मास्टर भीम

साँग्स ऑफ तुम्बी एंड किंग - जगतराम लालका

कैफी एंड हीर : बरकत सिद्धू

वूमेन्स सॉंग्स फ्रॉम पंजाब - कुलवंत कौर

सूफियाना सॉंग्स - पूरणचंद वडाली एंड प्यारेलाल वडाली

संगोष्ठी कार्यक्रम

28 - 31 अक्तूबर , 2002, गाँधी भवन, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

28 अक्तूबर

स्वागत भाषण

श्री जयंत कस्तुआर, सचिव, संगीत नाटक अकादेमी

उद्घाटन - प्रो. बी. एन. गोस्वामी

मुख्य भाषण

'मार्गी' - देसी इन द मॉड्रन कंटेक्स्ट' - प्रो. के. डी. त्रिपाठी

सत्र 1

अध्यक्ष डा. अजित सिंह पेंटल

'एन ओवरव्यू ऑफ द म्यूजिकल ट्रेडिशन ऑफ पंजाब' - डा. गुरनाम सिंह

'द ट्रेडिशन ऑफ गुरमत संगीत ऑफ पंजाब : फिजिक्स एंड एस्थेटिक्स' - डा. निवेदिता सिंह

सत्र 2

अध्यक्ष - प्रो. शफी शौक

'एन ओवरव्यू ऑफ द ट्रेडिशनल म्यूज़िक ऑफ जम्मू एवं कश्मीर - पंडित भजन सोपोरी

'एन एनालिसिस ऑफ द हिस्टोरिकल डेवलपमेंट एड द सिस्टम ऑफ राग एंड ताल इन सूफियाना कलाम' - श्री मिराजुद्दीन

'द लिटरेरी हेरीटेज ऑफ द म्यूजिक ऑफ कश्मीर विद स्पेशल रेफ्रेंस टू हब्बा खातून' - डॉ नीरजा मट्टू

29 अक्तूबर

सत्र 3

अध्यक्ष -श्री मोतीलाल क्यमू

' द स्पेशल कैरक्टरिस्टिक्स ऑफ भाखा एडं चिंजन' -श्री नीलाम्बर देव शर्मा

' द ट्रेडिशनल म्यूजिक एंड मोनस्टिक चैंट्स ऑफ द लद्दाख रिजन' - श्री मिफाम ओत्सल

'द म्यूज़िकल ट्रेडिशन ऑफ द गुज्जर ट्राइब' - श्री जावेद राही

सत्र 4

अध्यक्ष - शरयू केलकर,

'एन ओवरव्यू ऑफ द म्यूजिकल ट्रेडिशन ऑफ हिमाचल प्रदेश- प्रो. नन्द लाल गर्ग

'द ट्रेडिशनल म्यूजिक ऑफ द हिमाचल प्रदेश रिलेटिंग टू द लाइफ सायकल सेरेमनीज'- डा. मनोरमा शर्मा

'द ट्रेडिशनल म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट्स ऑफ हिमाचल प्रदेश विद् स्पेशल रेफ्रेंस टू स्ट्रिंग्ड एंड विंड इंस्ट्रूमेंट्स' - डा. जयराम शर्मा

सत्र 5

अध्यक्ष - भास्कर चंदावरकर

'द म्यूजिकल कंटेंट्स एंड फार्मेट ऑफ द नैरेटिव फॉर्म ऑफ हिमाचल प्रदेश' - श्री जगदीश शर्मा

'एन एनालिसिस ऑफ द ताल सिस्टम आफ द पर्कशन इंस्ट्रूमेंट्स ऑफ हिमाचल प्रदेश' - प्रो नंद लाल गर्ग

30 अक्तूबर

सत्र 6

अध्यक्ष - श्री गिरीश तिवारी

'एन ओवरव्यू ऑफ द म्यूजिकल ट्रेडिशंस ऑफ उत्तरांचल' - डा. शेखर पाठक

'कुमाऊँ का लोक संगीत - श्री देव सिंह पोखरिया

'द म्यूजिक्ल ट्रेडिशंस ऑफ द भोटिया (सौका)' - श्री शेर सिंह पंगती

'द ट्रेडिशनल म्यूजिक ऑफ गढ़वाल' - डा. दाता राम पुरोहित

सत्र 7

अध्यक्ष - श्री कोमल कोठारी

'एन ओवरव्यू ऑफ द म्यूजिक्ल ट्रेडिशंस ऑफ हरियाणा रिजन - श्री पूरन चंद शर्मा

'ट्रेडिशनल सॉंग रेपर्टरी ऑफ सांग' - श्री किशन चंद शर्मा

'द सॉंग ट्रेडिशन ऑफ द ब्रज एरिया' - श्री सुधीर शर्मा

'द ट्रेडिशन ऑफ म्यूजिक फ्रॉम द नैरेटिव सॉंग्स एंड बैलड्स विद् स्पेशल रेफ्रेंस टू द सॉंग्स ऑफ द जोगीज' - श्री आर के. भारद्वाज

31 अक्तूबर

सत्र 8

अध्यक्ष - डा. शन्नो खुराना

'द ट्रेडिशनल इंस्ट्रूमेंटल म्यूजिक्र ऑफ पंजाब' - भाई बलदीप सिंह

'द सूफी ट्रेडिशन इन द म्यूजिक्र ऑफ पंजाब विद स्पेशल रेफ्रेंस टू कैफी' - श्री कुलदीप कुमार

सत्र 9

अध्यक्ष - श्रीमती नीलम मानसिंह

'द हैरिटेज ऑफ ट्रेडिशनल म्यूजिक्र ऑफ वूमेन ऑफ पंजाब (संस्कार गीत)' - डा. सिम्मी आर सिंह

'द फोकलोर ट्रेडिशन ऑफ पंजाब विद् स्पेशल रेफ्रेंस टू बैलेडस एंड नैरेटिव फार्म्स' - श्री कंवलजीत सिंह

समापन सत्र

'एन ओवरव्यू एंड समिंग अप' - श्री भास्कर चन्दावरकर

नृत्य पर्व

सत्रिय नृत्य महोत्सव
15-17 नवम्बर, 2002, गुवाहाटी

संगीत नाटक अकादेमी द्वारा गुवाहाटी के रवीन्द्र भवन में 15 से 17 नवम्बर 2002 तक सत्रिय नृत्य के महोत्सव 'नृत्य पर्व' का आयोजन, असम सरकार के सांस्कृतिक मामले निदेशालय के सहयोग से किया गया था। महोत्सव का उद्घाटन, संगीत नाटक अकादेमी के रत्न सदस्य गुरू केलुचरण महापात्र ने किया। इस महोत्सव में 16 एवं 17 नवम्बर को प्रात: कालीन सत्र में गुरुओं एवं वरिष्ठ कलाकारों ने व्याख्यान निदर्शन किया एवं सायं काल सत्र में सत्रिय नृत्य के युवा कलाकारों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। इस महोत्सव के ज़रिए उभरते हुए सत्रिय नृत्य कलाकारों को कला प्रस्तुति के लिए मंच उपलब्ध कराया गया। इस महोत्सव की सामान्य जन एवं मीडिया ने भी भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस 'नृत्य पर्व ' में अकादेमी की 'नृत्य सलाहकार समिति' के सदस्यों, सत्रिय समिति एवं अन्य राज्यों के कुछ नृत्य समालोचकों ने भी भाग लिया।

अकादेमी ने गुवाहाटी में नृत्य पर्व महोत्सव का आयोजन कर सत्रिय नृत्य एवं इससे संबद्ध संगीत तथा रंगमंच की परंपराओं को सहयोग प्रदान करने वाली विशेष परियोजना का शुभारम्भ कर दिया। इस परियोजना का लक्ष्य, सत्रिय नृत्य कला को उसके मूल रूप में बनाए रखने तथा इसका विकास करने के लिए पहचाने गए सत्रिय नृत्य कलाकारों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने के साथ-साथ वार्षिक महोत्सवों द्वारा गुवाहाटी में (या किसी अन्य जगह प्रायोजित) सत्रिय कलाकारों के लिए प्रदर्शन के अवसर बढ़ाने, एवं इस विषय पर प्रलेखन, अनुसंधान एवं प्रकाशन के लिए सहयोग बढ़ाने का है।

कार्यक्रम
15 - 17 नवम्बर, रवीन्द्र भवन, गुवाहाटी

15 नवम्बर

उत्तरकमलाबारी सत्र (गायन बायन)

अपराजिता डावका एवं प्रणवी शर्मा, रामकृष्ण तालुकदार, वेदज्योति चौधरी, पल्लवी खौंद एवं अंजली बरबरा, भोगपुर सत्र (गायन बायन)

16 नवम्बर

बरपेटा सत्र (गायन बायन)

चित्रलेखा गोगोई एवं जोलीमणि सैकिया, भानु चहरिया देका, मिरानन्दा बड़ठाकुर, सतरूपा चटर्जी एवं कृष्णा चेतरी, नतून कमलाबारी सत्र (गायन बायन)

17 नवम्बर

बेलगुरी सत्र (गायन बायन)

अनीता शर्मा, मनलिशा बरा एवं कुंजा दास, तरली दास कमलाबारी सत्र (गायन बायन)

व्याख्यान - निदर्शन :

16 नवम्बर

गोबिंद सैकिया, शरदी सैकिया, सैलेन सैकिया

17 नवम्बर

घनकांत बरा, गरिमा हजारिका, जतिन गोस्वामी

भरतनाट्यम महोत्सव

भरतनाट्यम नृत्य का उत्सव
23 नवम्बर - 1 दिसम्बर, 2002, बंगलौर

संगीत नाटक अकादेमी ने 23 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2002 तक बंगलौर के रवीन्द्र कलाक्षेत्र में भरतनाट्यम के एक प्रमुख महोत्सव का आयोजन किया। इसमें कर्नाटक के भरतनाट्यम कलाकारों ने भाग लिया। इसके प्रात: कालीन सत्र में गुरुओं ने शिष्यों के साथ व्याख्यान-निदर्शन किया और सायं सत्र में वरिष्ठ एवं युवा नृत्य-कलाकारों ने नृत्य की प्रस्तुति की। यह आयोजन, अकादेमी द्वारा भरतनाट्यम के क्षेत्र में प्रशिक्षण एवं प्रस्तुति के स्तर का मूल्यांकन करने एवं भविष्य में सहयोग प्रदान करने के लिए तथा कला को समर्पित गुरुओं की पहचान करने के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित की जा रही भरतनाट्यम महोत्सव शृंखला का एक हिस्सा था। इसी प्रकार के आयोजन तमिलनाडु एवं उन अन्य क्षेत्रों में भी किए जाएँगे, जहाँ भरतनाट्यम का व्यापक स्तर पर प्रचलन है। इस महोत्सव का उद्घाटन पद्म भूषण एवं संगीत नाटक अकादेमी की रत्न सदस्य श्रीमती मृणालिनी साराभाई ने किया।

गुरूओं द्वारा प्रात: कालीन सत्र में की गयी कला प्रस्तुतियों का उद्घाटन, 24 नवम्बर को प्रख्यात गुरू एवं अकादेमी सम्मान प्राप्त प्रो. यू.एस. कृष्णा राव ने किया। यह आयोजन कर्नाटक सरकार के कन्नड़ एवं संस्कृति विभाग के सहयोग से किया गया था।

इस नौ दिवसीय महोत्सव में, कर्नाटक की कई प्रख्यात हस्तियों सहित 100 से ज्यादा नृत्य कलाकारों एवं 50 नृत्य गुरुओं ने भाग लिया। प्रतिभागियों में प्रो. यू एस.कृष्णाराव के अलावा श्री एच. आर. केशवमूर्ति एवं श्रीमती प्रतिभा प्रह्लाद भी शामिल थे। सुविख्यात भरतनाट्यम नृत्यांगना एवं अकादेमी सम्मान से सम्मानित श्रीमती अलरमेल वल्ली इस महोत्सव के समापन के दिन तमिलनाडु से नृत्य प्रस्तुति के लिए बंगलौर आयीं। दक्षिण भारत के कई विशेषज्ञ एवं पर्यवेक्षक, भाग लेने वाले कलाकारों के साथ पारस्परिक विचारों के आदान-प्रदान करने के लिए इस महोत्सव में आए।

इस महोत्सव में कर्नाटक के भरतनाट्यम कलाकारों का पूरा समुदाय, भरतनाट्यम प्रशंसकों के साथ आनन्दपूर्ण उत्सव में एकत्र हुए। यह महोत्सव भरतनाट्यम नृत्य की वर्तमान स्थिति के पुनर्मूल्यांकन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

महोत्सव कार्यक्रम
23 नवम्बर से 1 दिसम्बर, 2002
रवीन्द्र कलाक्षेत्र, बंगलौर

नृत्य प्रस्तुति

23 नवम्बर
उद्घाटन : कीर्ति रामगोपाल, रंजनी गणेशन, प्रतिभा प्रह्लाद, उमा राव ग्रुप

24 नवम्बर
करूपा फड़के , शुभा धनंजय, श्रीधर/अनुराधा, एम. आर. कृष्णमूर्ति ग्रुप

25 नवम्बर
अशोक कुमार/ प्रकाश नायडू/ पुलिकेसी/ नागेश/ सुधीर, सुमन नागेश, राधिका नन्दकुमार, राधा श्रीधर ग्रुप

26 नवम्बर
प्रियंवदा मुरली, प्रवीण कुमार/ सत्यनारायण राजू/ सुभाषिणी वसंत रंगश्री/ रेवती नरसिंह्मन ग्रुप

27 नवम्बर
नविया नटराजन, सौंदर्या, पद्मजा सुरेश, पद्मिनी राव एवं ग्रुप

28 नवम्बर
लक्ष्मी बाई, शेषाद्री आयंगर, प्रीति सुंदराज, हमसा मोइली, तोशनीवाल, पूर्णिमा अशोक, के राममूर्ति राव ग्रुप

29 नवम्बर
शीला शेखर/ राधिका चैतन्य, शुबारानी बोलर, डा. ए. आर. श्रीधर, पद्मिनी रामचन्द्रन ग्रुप

30 नवम्बर
अजय विश्वनाथन/ चंद्रिका नारायण, चेतना राधाकृष्ण, किरण सुब्रह्मण्यम्/ संध्या किरण, पद्मिनी रवि, ललिता श्रीनिवासन ग्रुप

1 दिसम्बर
शुभा पटवर्धन, लक्ष्मी गोपालस्वामी, अलरमेंल वल्ली, भानुमति ग्रुप

राग दर्शन

28 नवम्बर - 1 दिसम्बर, 2002

संगीत नाटक अकादेमी द्वारा कोलकाता में 28 नवम्बर से 1 दिसम्बर, 2002 तक 'राग दर्शन' नामक व्याख्यान निदर्शनों की सात दिवसीय शृंखला आयोजित की गयी। इसका उद्देश्य हिन्दुस्तानी संगीत के असाधारण रागों के क्षेत्र की खोज करना तथा ऐसे रागों का विशेष रूप से प्रदर्शन करना था जो आज संगीत समारोहों में कम ही सुनने में आते हैं। इस आयोजन में विभिन्न घरानों की संगीत परंपरा ; एक दूसरे पर पड़े प्रभाव एवं विभिन्न रागों के उद्भव एवं विकास पर भी विचार किया गया। इस कार्यक्रम में बेगम परवीन सुल्ताना, पं. दिनकर कैकिनी, पं अजय चक्रवर्ती, पं. एल.के पंडित, उस्ताद रहीम फहीमुद्दीन डागर एवं पं. अभय नारायण मल्लिक जैसे कलाकारों ने हिस्सा लिया जिन्हें संगीत नाटक अकादेमी के हिन्दुस्तानी संगीत पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह आयोजन, प. बंगाल सरकार के सूचना एवं सांस्कृतिक मामले विभाग तथा आई टी सी संगीत रिसर्च अकादेमी के सहयोग से किया गया।

कोलकाता के रसिकजनों ने हफ़ीज अहमद खान, दिनकर कैकिनी, टी.डी. जनोरिकर, सुहासिनी कोरटकर, प्रकाश वढेरा, श्रीकृष्ण हल्दानकर, भारती वैशंपायन, दिपाली नाग, सुलोचना बृहस्पति, रामाश्रय झा, कुमार प्रसाद मुखर्जी, मशकूर अली खान, गुलाम मुस्तफा खान, लक्ष्मण कृष्णराव पंडित, अभय नारायण मल्लिक, उल्हास कशालकर, शन्नो खुराना, राजशेखर मंसूर, अजय चक्रवर्ती एवं इकबाल अहमद खान द्वारा किए गए व्याख्यान -निदर्शन का आनन्द लिया।

नाट्य पर्व

अकादेमी का नाट्योत्सव

1 - 16 दिसम्बर, 2002, मुम्बई

संगीत नाटक अकादेमी ने मुम्बई के नेशनल सेंटर फॉर पर्फार्मिंग आर्ट्स, पृथ्वी थियेटर, वाई.बी.चह्वान सेंटर एवं एकजुट के सहयोग से मुम्बई में 1 से 16 दिसम्बर 2002 तक नाट्य पर्व नामक नाट्य महोत्सव का आयोजन किया। टाटा थियेटर, एन सी पी ए एक्सपेरिमेंटल थियेटर, वाई बी चाह्वान सेंटर एवं पृथ्वी थियेटर में नाटकों का मंचन किया गया।

यह महोत्सव, अकादेमी द्वारा विगत वर्षो में आयोजित किए गए समकालीन रंगमंच के प्रमुख प्रदर्शनों में एक था, जिसमें देश के विभिन्न भागों की विभिन्न भाषाओं के चुनिन्दा नाटकों को दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया गया था। अकादेमी द्वारा इस तरह का अंतिम उपक्रम, सन् 1989 में दिल्ली में आयोजित 'नेहरू शताब्दी नाट्य समारोह' था। इस समारोह में नाटक और नाटककार पर ही ध्यान आकर्षित किया गया है। नाट्य पर्व में निर्देशकों पर ही ध्यान केन्द्रित किया गया। सन् 1985 के बाद के वर्षो में संगीत नाटक अकादेमी द्वारा सम्मानित किए गए निर्देशकों ने ही इस महोत्सव में भाग लिया। नाट्य पर्व में महाकाव्य एवं लोकप्रिय कविता, लोक साहित्य एवं समकालीन कथा साहित्य पर आधारित प्रस्तुतियाँ, भारतीय एवं अभारतीय स्रोतो से लिए गए उत्कृष्ट नाटकों का मंचन एवं निर्देशकों द्वारा बनाए गए नाटकों की कहानियों पर आधारित प्रस्तुतियों समेत, विविध कला प्रदर्शन शामिल थे। बहुत से नाटकों में सामाजिक एवं राजनीतिक मुद्दों से गहरी वचनबद्धता दिखायी पड़ रही थी तो कुछ अन्य नाटकों में रंगमंच की विशिष्ट भाषि‍क विशेषता की खोज की स्पष्ट झलक दिखाई दी।

नाट्य पर्व में अन्य भाषाओं के अलावा कश्मीरी, डोगरी, पंजाबी, असमिया एवं तमिल जैसी भाषाओं में भी नाटक प्रस्तुत किए गए जिनमें आमतौर पर अखिल भारतीय नाट्य समारोहों में नाट्य प्रस्तुति नहीं की जाती है।

नाट्य पर्व, भारतीय रंगमंच के उन चार प्रख्यात रंगकर्मियों शांता गाँधी, दीना पाठक, बी.वी. कारंत एवं मनोहर सिंह को समर्पित था जिनका देहावसान हाल ही के महीनों में हुआ।

कार्यक्रम

1 दिसम्बर

ऋतुसंहारम् (मणिपुरी)

निर्देशक - रतन थियम, कोरस रेपर्टरी थियेटर, इम्फाल

2 दिसम्बर

सोनाटा (अंग्रेजी)

निर्देशक - अमल अल्लाना, थियेटर एवं टेलीविजन एसोसिएटस, दिल्ली

3 दिसम्बर

अका नंदुन (कश्मीरी)

निर्देशक - मोती लाल क्यमू,

नेशनल भांड थियेटर, वथोरा, कश्मीर

4 दिसम्बर

कहें कबीर (हिन्दी)

निर्देशक बंसी कौल, रंग विदूषक, भोपाल

5 दिसम्बर

महानिर्वाण (मराठी)

निर्देशक सतीश आलेकर, थियेटर एकेडमी, पुणे

6 दिसम्बर

सरकारी इंस्पेक्टर (असमिया)

निर्देशक - दुलाल रॉय, रंगपीठ, गुवाहाटी

7 दिसम्बर

पुडुकलम (तमिल)

निर्देशक - एन मुत्तुस्वामी

कूथु - पी - पट्टरइ ट्रस्ट, चेन्नई

8 दिसम्बर

'दीवार में इक खिड़की रहती थी' (हिन्दी)

निर्देशक मोहन महर्षि, एन एस डी रेपर्टरी कंपनी, दिल्ली

9 दिसम्बर

घुमाई (डोगरी)

निर्देशक - बलवंत ठाकुर, नटरंग, जम्मू

10 दिसम्बर

माधव मलाची केइनया (बांग्ला)

निर्देशक विभाष चक्रवर्ती, अन्य थियेटर, कोलकाता

'सुमन और साना '(हिन्दी)

निर्देशक - नादिरा ज़हीर बब्बर, एकजुट, मुम्बई

11 दिसम्बर

चित्रपट (कन्नड़)

निर्देशक - बी जयश्री, स्पंदन, बंगलौर

नाटक मुंशी खान दा (पंजाबी)

निर्देशक : गुरशरण सिंह

चंडीगढ़ स्कूल ऑफ ड्रामा, चंडीगढ़

12 दिसम्बर

नूपि (मणिपुर)

निर्देशक - कन्हाई लाल सिंह, कलाक्षेत्र मणिपुर, इम्फाल

13 दिसम्बर

तुम स-आदत हसन मंटो हो (हिन्दी/उर्दू)

निर्देशक - एम के रेना, प्रयोग, दिल्ली

'मिथ्याभिमान' (गुजराती)

निर्देशक - कैलाश पंडया

दर्पण एकेडमी ऑफ पर्फामिंग आर्ट्स, अहमदाबाद

14 दिसम्बर

महामायी (हिन्दी)

निर्देशक - भानु भारती, आज, उदयपुर

15 दिसम्बर

'इट्स ऑल एबाउट मनी, हनी' (हिन्दी/अंग्रेजी)

निर्देशक - बैरी जॉनद्ध इमागो थियेटर ग्रुप, दिल्ली

'शोभायात्रा' (हिन्दी)

निर्देशक - उषा गांगुली, रंगकर्मी, कोलकाता

16 दिसम्बर

रोमियो एवं जूलियट' (अंग्रेजी)

निर्देशक - अलीक पद्मसी, क्यू थियेटर प्रोडक्शंस, मुम्बई

पुतुल यात्रा

राष्ट्रीय पुतुल नाट्य महोत्सव
कार्यक्रम, संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी
17 - 28 मार्च, 2003, दिल्ली

संगीत नाटक अकादेमी ने अपने स्वर्ण जयंती महोत्सव के एक अंग के रूप में अखिल भारतीय पुतुल नाट्य महोत्सव 'पुतुल यात्रा' का आयोजन रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली के मेघदूत थियेटर में 17 से 28 मार्च 2003 तक किया। पारंपरिक एवं समकालीन पुतुल कला में निपुण पूरे देश के 32 पुतुल नाट्य समूहों द्वारा की गयी नाट्य प्रस्तुतियाँ इस महोत्सव की विशेषता थी। महोत्सव में भारतीय पुतुलों की प्रदर्शनी, वीडियो वृत्तचित्रों का स्क्रीन पर प्रदर्शन एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन भी किए गए।

संगीत नाटक अकादेमी द्वारा भारतीय पुतुल नाट्य का निरूपण करने वाले अब तक के इस सबसे विशाल कार्यक्रम 'पुतुल यात्रा' का आयोजन भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर एवं 'द यूनियन इंटरनेशनले डे ला मेरियनेट्टे (यूनिमा)' के सहयोग से किया गया।

महोत्सव के दौरान पुतुल कर्मियों ने कर्नाटक के पारंपरिक धागा पुतुल, आंध्र प्रदेश के छाया पुतुल, प.बंगाल के छड़ एवं दस्ताना पुतुल सहित और अधिक समकालीन तकनीकों के साथ पुतुल कला के विभिन्न रूपों का प्रदर्शन किया।

सोमवार 17 मार्च

उद्घाटन

यक्षगान गोम्बेयाट्टा

कर्नाटक का पारम्परिक/धागा पुतुल नाटक

श्री गणेश यक्षगान गोम्बेयाट्टा मंडली, कुन्दापुरा जिला

दल नायक : भास्कर कोगा कामथ

तोलू बोम्मालाटा

आंध्र प्रदेश का पारम्परिक/छाया पुतुल नाटक, **सुंदर कांडम**, **छाया नाटक बुंडम**

थोटा राममूर्ति एवं समूह

दलनायक: एस चिदम्बरा राव

मंगलवार, 18 मार्च

ऑलमोस्ट ट्वेल्थ नाइट

समसामयिक/छड़ एवं हस्त पुतुल नाटक, **कठ कथा**, दिल्ली

निर्देशक : अनुरूपा रॉय

डांगेर पुतुल

पं. बंगाल का पारम्परिक/छड़ पुतुल नाटक: **सीतार वनवास**

कमलादेवी चट्टोपाध्याय की याद में

पुतुल यात्रा, अकादेमी की पूर्व अध्यक्ष कमलादेवी चट्टोपाध्याय (1903-1988) की याद को समर्पित थी। यह संयोग ही है कि इनका जन्मशती वर्ष एवं संगीत नाटक अकादेमी का स्वर्ण जयंती वर्ष एक ही है। इनकी पुतुल कला में दिलचस्पी भी कुछ हद तक एक कारण है कि अकादेमी ने अपने प्रारंभिक वर्षों से ही पुतुल रंगमंच को समर्थन दिया। यह पुतुलकला में प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना, पारंपरिक एवं अपारंपरिक पुतुल कर्मियों की भागीदारी वाली कार्यशाला आयोजित करना, ऐसी संगोष्ठियाँ आयोजित करना (जिनमें वर्तमान समय की समस्याओं एवं मुद्दों पर विचार-विमर्श किये गए) एवं ऐसे महोत्सव आयोजित करना (जिसमें विभिन्न रूपों में पुतुलकला को जन सामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया गया) आदि रूपों में किया गया। अकादेमी ने दिल्ली में 1990 में पुतुल नाट्य का अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव 'भारत अंतर्राष्ट्रीय पुतुल नाट्य महोत्सव' (द इंडिया इंटरनेशनल पपेट फेस्टिवल) भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सहयोग से आयोजित किया था। अकादेमी ने सन् 1992 से 1998 तक भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पुतुलकला संबंधी कार्यों पर केन्द्रीभूत करने वाली छह कार्यशालाओं की शृंखला भी आयोजित की थी।

सत्य नारायण पुतुल नाट्य संस्था, प. बंगाल
दलनायक : निरापदा मंडल
तोल पावा कूत्तु
केरल का पारम्परिक/छाया पुतुल नाटक: कंबन **रामायण**
कृष्णन कुट्टी पुलवर मेंमोरियल
तोल पावा कूत्तु एंड पपेट सैन्टर, केरल
दल नायक : राम चन्द्र पुलवर

बृहस्पतिवार, 20 मार्च
रावणछाया
उड़ीसा का पारम्परिक छाया पुतुल नाटक: **रामायण**
रावणछाया नाट्य संसद, उड़ीसा
दल नायक : कोल्हू चरण साहू
कंढेई नाच
उड़ीसा का पारम्परिक दस्ताना पुतुल नाटक:
उत्कल विश्वकर्मा, कलाकुंज
कंढई नाच, केओनझार
दल नायक : मागुनी चरण कुँवर
अल्लादीन
समसामयिक छड़ पुतुल नाटक
कलकत्ता पपेट थियेटर, कोलकाता, पं.बंगाल
निर्देशक : सुरेश दत्ता

शुक्रवार , 21 मार्च
'यूनिमा' विश्व पुतुल दिवस का आयोजन
बेनीर पुतुल
पं. बंगाल का पारम्परिक दस्ताना पुतुल नाटक
विष्णु प्रिया पुतुल पार्टी, 24 - परगना
दल नायक: रामपद घोरई एवं वसन्त घोरई
तोल बोमलाट्टम
तमिलनाडु का पारम्परिक छाया पुतुल नाटक: **सुंदर कांडम**
सेलवाराजा छाया पुतुल समूह, तमिलनाडु
दल नायक: ए.सेलवाराजा
जरनीज़
समसामयिक छड़ एवं मुखौटा पुतुल नाटक
इशारा पपेट थियेटर ट्रष्ट, दिल्ली
निर्देशक : दादी डी. पदुमजी

शनिवार, 22 मार्च
1001 इंडियन नाइट्स
समसामयिक छड़ एवं हस्त पुतुल नाटक
पाइ थियेटर, दिल्ली
निर्देशक : वरूण नारायण

सलाकी गोम्बेयाट्टा
कर्नाटक का पारम्परिक धागा एवं छड़ पुतुल नाटक, **कर्नाटक**
श्री भुवनेश्वरी सूत्रदा बोम्बे मेला, मांडया जिला
दल नायक : पुट्टसमाचार बी
क्षुदे पतुआर रूपकथा
समसामयिक छड़ पुतुल नाटक
पिपुल्स पपेट थियेटर, कोलकाता, पं.बंगाल
निर्देशक : हीरेन भट्टाचार्य

रविवार, 23 मार्च
रूतिर गोप्पो
समसामयिक/दस्ताना पुतुल नाटक
ताल बेताल पपेट थियेटर, कोलकाता
निर्देशक : शुभाशीष सेन
पावा कथकली
केरल का पारम्परिक दस्ताना पुतुल नाटक: **दक्षयागम**
नटन कैराली, केरल
दल नायक : जी वेणू
तोगालु गोम्बेयाट्टा
कर्नाटक का पारम्परिक छाया पुतुल नाटक: एक्सपर्ट्स फ्राम गाँधी
श्री रमनजनेय तोगलू गोम्बे मेला, बेलारी
दल नायक: बी. वीरन्ना

सोमवार, 24 मार्च
डैथ ट्रेप
समसामायिक छड़ पुतुल नाटक
सलाम बलक ट्रस्ट, दिल्ली
निर्देशक : कपिल देव
बोम्मलाट्टम
तमिलनाडु का पारम्परिक/धागा पुतुलनाटक: सीता कल्या**णम** एवं **मैरिज ऑफ वैली विद्** लॉर्ड मुरुगा
श्री मुरूगन संगीत बोम्मलाट्टा सभा, तमिलनाडु,
दल नायक : टी एन शंकरनाथन
टेमिंग आफ द वाइल्ड
समसामयिक छड़ पुतुल नाटक
डॉल्स थियेटर, कोलकाता
निर्देशक : सुदीप गुप्ता

मंगलवार, 25 मार्च
कठपुतली
राजस्थान का पारम्परिक धागा पुतुल नाटक: **ढोल मारु**
आकार पपेट थियेटर, दिल्ली
दल नायक : पूरन भट्ट

यक्षगान बोम्बेयाट्टा

कर्नाटक का पारम्परिक धागा एवं छड़ पुतुल नाटक: नरकासुर वध

श्री गोपालकृष्ण यक्षगान बोम्बेयाट्टा संघ, कसेरगॉड

दल नायक : के.वी. रमेश

ईदगाह एवं रंगीला

समसामायिक छड़ पुतुल नाटक

मयूर पपेट थियेटर, लखनऊ

निर्देशक : मिलन यादव

बुधवार, 26 मार्च

मेंढक बुद्धि

समसामायिक/ दस्ताना एवं छड़ पुतुल नाटक, **नूरी पपेट थियेटर**

नूरी आर्ट एवं पपेटरी सैन्टर, हैदराबाद

निर्देशक : रत्नामाला नूरी

समसामायिक/ छड़ पुतुल नाटक: होल्दे झुंटी मोरोगती

वर्द्धमान पपेट थियेटर, एंड कल्चर सैन्टर

वर्द्धमान, पं. बंगाल

निर्देशक : स्वप्न रॉय

बडक्कन पट्टू

समसामायिक धागा पुतुल नाटक

समन्वय पवंतका संगम, अयनचेरी, केरल

निर्देशक : टी.पी. कुनिरमण

बृहस्पतिवार, 27 मार्च

तरेर पुतुल

प. बंगाल का पारम्परिक धागा पुतुल नाटक: **सिंधु बध**

धीरेन नाट्य पुतुल नाच पार्टी, प. बंगाल

दल नायक : कृष्णापदा सरदार

तिडो जोशी

समसामायिक छड़ पुतुल नाटक

महेर - द ट्रुप, अहमदाबाद

निर्देशक मनसिंग ज़ाला

कलासूत्री बाहुल्य

महाराष्ट्र का पारम्परिक धागा पुतुल नाटक

गणपत सखाराम, मास्गे और समूह, पिंगुली, महाराष्ट्र

दल नायक : गणपत सखाराम मास्गे

शुक्रवार, 28 मार्च

पुतुल नाच

असम का पारम्परिक धागा पुतुल नाटक: **सीता हरण एवं लव कुश**

रूबी पपेट थियेटर, कामरूप, असम

दल नायक : अबानी शर्मा

कोया बोम्मालाट्टा

आंध्रप्रदेश का पारम्परिक धागा पुतुल नाटक

दल नायक : एम. उप्पलैया

तेतानी

समसामयिक छड़ पुतुल नाटक

त्रिपुरा पपेट थियेटर, अगरतला, **त्रिपुरा**

निर्देशक : प्रभितांशु दास

महोत्सव में 'यूनिमा'

महोत्सव में बड़ी संख्या में स्थानीय दर्शकों के अलावा यूनिमा की कार्यकारी परिषद के सदस्यों, (जिनकी बैठक इस अवधि में फ्रांस के माग्रेट निकलस्क्यू की अध्यक्षता में दिल्ली में हुई) सहित 16 विदेशी प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। इसका समन्वय, प्रख्यात, पुतुल नाट्यकर्मी एवं संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार विजेता श्री दादी पद्मजी ने किया जो यूनिमा के उपाध्यक्ष भी है। यूनिमा, यूनेस्को से संबद्ध एक संस्था है जिसका उद्देश्य पुतुल कला में और ज्यादा जानकारी प्राप्त करने में दिलचस्पी रखनेवालों को सहायता करने के साथ-साथ प्रशिक्षण, शिक्षण एवं चिकित्सा (थिरेपी) जैसे नए क्षेत्रों में साझेदारी को प्रोत्साहित करना है। यह संस्था 58 देशों में कार्यरत है।

विश्व पुतुल दिवस

महोत्सव के दौरान हुई एक बैठक में यूनिमा ने हर वर्ष 21 मार्च को विश्व पुतुल दिवस मनाने का निश्चय किया। इसलिए अकादेमी ने महोत्सव के दौरान दिल्ली में यूनिमा के सहयोग से प्रथम विश्व पुतुल दिवस मनाया। इराक में युद्ध छिड़ जाने के कारण यूनिमा ने इसे कम धूमधाम से मनाने का निश्चय किया। चंडीगढ़ के सेवा (सी इ वी ए) समूह ने संक्षिप्त, प्रस्तुतीकरण के आयोजन में दो विशाल, चेहराविहीन छड़ पुतुलों के माध्यम से शांतिवादी संदेश दिया।

डा. कपिला वात्सयायन ने यूनिमा के अध्यक्ष सुश्री मारग्रेट निकलस्क्यू के अनुरोध पर विश्व पुतुलदिवस के सुअवसर पर पहले हिंदी एवं अंग्रेजी में संदेश सुनाया। बाद में इसका अनुवाद स्पैनिश एवं फेंच में पढ़कर सुनाया गया।

पुतुलों की प्रदर्शनी

इस अवसर पर रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली के मेघदूत थियेटर कॉम्पलेक्स में 21 मार्च से 4 अप्रैल तक पुतुलों एवं पुतुलकर्मियों की कला प्रदर्शनी लगायी गयी। प्रदर्शनी में असम, कर्नाटक, केरल, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान एवं तमिलनाडु के धागा, छड़, दस्ताना एवं छाया पुतुलों सहित

अकादेमी के संग्रह से लिए गए 200 से ज्यादा पुतुल प्रदर्शित किए गए। महोत्सव के दौरान प्रदर्शनी में भाग ले रहे समकालीन पुतुलकर्मियों द्वारा कई पुतुल उधार भी लिए गए थे।
इस प्रदर्शनी का उद्घाटन 21 मार्च 2003 को सुश्री मारग्रेट निकलस्क्यू ने किया ।

वीडियो शो
अकादेमी ने कई वर्षों में पुतुल कला के वीडियो वृत्तचित्रों का अच्छा खासा संग्रह तैयार किया है। पुतुल यात्रा में इन सामग्रियों में से कुछ को स्क्रीन पर दिखलाया गया। इस के लिए मेघदूत थियेटर में दो बड़े स्क्रीन लगाए गए थे।

वीडियो में उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत के पारंपरिक पुतुल नाट्य के साथ-2 समकालीन पुतुल नाटक को भी दिखाया गया। 22 से 24 मार्च 2003 तक सायंकाल में प्रस्तुतियों से पहले फिल्में भी दिखायी गयीं।

पुतुल कला पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
इस अवसर पर नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में 23 से 25 मार्च 2003 तक 'पपेट : ईस्ट - वैस्ट, वैस्ट - ईस्ट' शीर्षक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी भी आयोजित की गयी। संगोष्ठी में भाग लेने वालों में यूनिमा की कार्यकारी समिति के सदस्यों के साथ अकादेमी द्वारा आमंत्रित किए गए अन्य पुतुलकर्मी एवं विशेषज्ञ भी शामिल थे।

संगोष्ठी में निम्नलिखित आलेख प्रस्तुत किए गए -
'फ्राम एक्ज़ौटिक इंटरटेनमेंन्ट टू सोर्स ऑफ एस्थेटिक इंस्पायरेशन' - जान मैककॉरमिक

'ग्लोबलाइज़ेशन - नेगोशिएटिंग द टेरेन फॉर ईस्ट वैस्ट पपेटरी एनकाउंटर्स' - जैन्नी फिफ्फर

'प्रोसपेरोस डेमी, पपेट्स : ए टेल ऑफ थ्री टेम्पेस्ट्स' - ब्रैडफोर्ड क्लार्क

'वैस्ट-ईस्ट एज द टू ऐंगल्स ऑफ हयूमन एक्ज़िसटेन्स' - घरीबपोर बहरॉज़'

'कम्यूनिकेशन थ्रू पपेटस : एन एक्जिबिशन ऑन नॉन - वैस्टर्न पपेटरी एज एन एक्जामपल ऑफ कल्चर इंटरचेंज' : एलिज़ाबेथ डेन औट्टर

'कंटेपररी पपेट थियेटर इन स्लोवाकिया' इडा हलेडिकोवा

पूर्व संध्या पर की गयी प्रस्तुति
पावा ' कथकली प्रस्तुति - जी वेणू

'द ट्रेडिशनल पपेट प्ले एंड पॉसिबिलिटी ऑफ इनोवेशन : एन एक्सपेरिमेंट : डा. एस. ए. कृष्णैया

'एडॉप्टेशन्स एंड इन्फ्लूयेन्सेज' - दादी पद्मजी

'मेंमरी, डिसप्लेसमेंट एंड रिक्रियेशन इन साउथ इंडियन पपेटरी ट्रेडिशन': एम डी मुत्तुकुमारस्वामी

ऐक्टर्स विदॉउट मेंमरी : इवोंटिंग ए फार्म इन द एबसेन्स ऑफ ट्रेडिशन इन टेम्बॉर्स सुर ला डिग्यू : ब्रायन सिंगलटन, इंग्लैंड' - इंडिया, इंडिया-इंग्लैंड' - पेन्नी फ्रांसिस

' पाउडर पपेटस, ए लूसो - चाइनिज लेगेसी टू ब्राजील' - मेंग्दा मोडेस्टो, 'इंडियन इंफ्लूयन्सेस इन अमेरिकन पेपेटरी': नेन्सी स्टॉब (आलेख ब्राडफोर्ड क्लार्क ने पढ़ा)
'इंफ्लूयन्स ऑफ ओब्रास्टोव इन कलकत्ता पपेट थियेटर' : सुरेश दत्ता 'एडॉप्टेशन्स इन द कथकली ट्रेडिशन' : कोमल कोठारी

विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता जॉन मैककॉर्मिक, मारग्रेट निकलस्क्यू पेन्नी फ्रांसिस, दादी पद्मजी एवं एम.डी. मुत्तुकमारस्वामी ने की। डा. कपिला वात्सयायन ने सत्रों का समन्वय किया। 25 मार्च को संगोष्ठी की समाप्ति डा. वात्सयायन के विदाई भाषण से हुई।

युवा रंगकर्मियों के लिए कार्यशाला

अकादेमी ने 'युवा रंगकर्मियों को सहायता' योजना के तहत प्रतिवर्ष चार से पॉच कार्यशालाएँ आयोजित करने का कार्यक्रम शुरू किया है । इसका उद्देश्य युवा पीढ़ी के रंगकर्मियों को समकालीन रंगमंच में समेकित प्रशिक्षण उपलब्ध कराना है। रंगकर्म में आधारभूत प्रशिक्षण के साथ राज्यों की पारम्परिक एवं लोक संस्कृति पर भी जोर दिया जाता है। प्रशिक्षण के व्यावहारिक पहलुओं में मूकाभिनय, गति, ध्वनि एवं वाचन, मंच, प्रकाश व्यवस्था, पोशाक सज्जा, रंग-संगीत आदि में कक्षाएँ आयोजित करना शामिल है। प्रशिक्षुओं को यह भी सिखाया जाता है कि उनके क्षेत्र में उपलब्ध देशी सामग्री का उपयोग कैसे करना है और उनके प्रयोग करने के लिए जो भी संसाधन एवं सामग्री उनके पास उपलब्ध है उसे कैसे अनुकूल बनाना है। अन्य राज्यों से आमंत्रित विशेषज्ञों के अलावा स्थानीय विशेषज्ञों को भी कार्यशाला में योगदान करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। समवर्गी कलाओं में व्याख्यान-निदर्शन के साथ सहायक सामग्री भी दी जाती है तथा प्रदेश के लोक एवं पारम्परिक कलारूपों का प्रदर्शन भी किया जाता है। प्रतिभागियों के लाभ के लिए अकादेमी के अभिलेखागार में उपलब्ध रंगमंच संबंधी वीडियो रिकार्डिंग भी दिखायी जाती है। इन कार्यशालाओं का आयोजन क्षेत्रवार किया जाता है तथा सामान्यत: राज्यों के संस्कृति विभाग या प्रदर्शन कलाओं के क्षेत्र में काम कर रही अन्य संस्थाओं के सहयोग से किया जाता है।

अकादेमी ने वर्ष 2001-2002 में उत्तरी भारत के हिमाचल प्रदेश, पंजाब, जम्मू एवं कश्मीर, हरियाणा एवं केन्द्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ में कुल पाँच कार्यशालाओं का आयोजन किया था। वर्ष 2002-2003 में तीन कार्यशालाएँ देहरादून, बोकारो और गंगटोक में आयोजित की गयी। इसका विवरण निम्नलिखित है :

देहरादून (25 जून - 15 जुलाई)

कार्यशाला निदेशक : श्री ललित मोहन थपलियाल -

कार्यशाला देहरादून के भातखांडे संगीत विद्यालय में उत्तरांचल सरकार के सांस्कृतिक कार्य विभाग के सहयोग से आयोजित की गयी। चार महिलाओं समेत उन्नीस अभ्यर्थी गढ़वाल, रूड़की, पौढ़ी, पिथौरागढ़, चमोली, नैनीताल, चम्पा, हल्द्वानी, ऋषिकेश और देहरादून से चुने गए थे। उत्तरांचल के रंगकर्मी श्री अहसान बख्श ने कार्यशाला का समन्वय किया। रंगमंच एवं सम्बद्ध विषयों के प्रख्यात विशेषज्ञों को कार्यशाला में आमंत्रित किया गया जिनके नाम निम्नलिखित है - निर्देशन में प्रशिक्षण देने के लिए श्रीमती उषा गांगुली, अभिनय में श्रीमती उत्तरा बाओकर, प्रकाश व्यवस्था में श्री वी. राममूर्ति, स्पन्दन में श्री नरेन्द्र शर्मा, नाट्यलेखन में डा. गोविन्द चातक, रूप सज्जा में श्री बी.एस. कुलकर्णी, पोशाक में श्रीमती कीर्ति वी शर्मा, मंचसज्जा में श्री मुश्ताक काक और योग में श्रीमती अपूर्वा।

संगीत नाटक अकादेमी के सचिव श्री जयन्त कस्तुआर ने 25 जून को कार्यशाला का उद्घाटन किया। कार्यशाला 15 जुलाई 2002 तक चली।

झारखंड (2 - 31 अक्तूबर, 2002)

एस ए आइ एल (सेल) बोकारो स्टील सिटी, झारखंड के सहयोग से बेकारो में 2 से 31 अक्तूबर 2002 तक आयोजित की गयी। राँची, हजारी बाग, लोहरदगा, धनबाद बोकारो एवं दुमका से 28 अभ्यर्थियों को चुना गया। झारखंड के रंगकर्मी श्री बिपिन कुमार ने कार्यशाला का समन्वय किया। दिल्ली से श्री जे. एन. कौशल, इम्फाल से श्री रतन थियम, चंडीगढ़ से डा. महेन्द्र, बंगलौर से श्री वी राममूर्ति, कोलकाता से श्री सलिल सरकार एवं श्री निरंजन गोस्वामी, दिल्ली से श्री सुधीर कुलकर्णी, श्री शशधर आचार्य एवं पटना से श्री संजय उपाध्याय सहित अन्य रंगकर्म विशेषज्ञों को बतौर संकाय सदस्य आमंत्रित किया गया था। डा. गिरधारी राम गुंझु, डा. अनिल ठाकुर, डा. महावीर नायक और डा. रतन प्रकाश ने क्षेत्र के कला रूपों का प्रतिनिधित्व किया। राँची के कला कुंज केन्द्र एवं हटिया के बिरसा कला केन्द्र द्वारा नागपुरी झूमर की प्रस्तुति की गयी। पूर्वी सिंहभूम स्थित चमुंडी के आदिम भूमि खेरवार संघ द्वारा फिर काल मार्शल डांस की प्रस्तुति की गयी। राँची केबिबियाना डुंगडुंग खड़िया संस्कृत संघ द्वारा खड़िया की प्रस्तुति की गयी।

गंगटोक (10 फरवरी - 9 मार्च, 2003)

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अकादेमी ने सिक्किम के संस्कृति विभाग के सहयोग से गंगटोक में 10 फरवरी से 9 मार्च 2003 तक युवा रंगकर्मियों के लिए आवासीय कार्यशाला आयोजित की। यह कार्यशाला इस शृंखला के अन्तर्गत पूर्वी मंडल में आयोजित दूसरी कार्यशाला थी। इसके लिए दिल्ली स्थित संगीत नाटक अकादेमी एवं सिक्किम सरकार के गंगटोक स्थित संस्कृति विभाग के पास कुल 75 आवेदन प्राप्त हुए थे। अन्तत: 24 युवा रंगकर्मियों को इस कार्यशाला के लिए चुना गया।

आमंत्रित विशेषज्ञों में कन्हाईलाल, साबित्री हैसनाम, गोबिंद धकाल, डॉली ए तिवारी, भास्कर चन्दावरकर, दुलाल रॉय, सत्यव्रत राउत, बिरजित नागनोम्बा, रतन थियम, निरंजन गोस्वामी एवं कनिष्क सेन शामिल थे। आमंत्रित क्षेत्रीय

विशषज्ञों में बनितलगुन, मालती चेट्री, शकुंता के; टिका माया प्रधान, समतेन भूटिया एवं तारा धिताल शामिल थे।

हैदाराबाद में दो तेलगु नाटकों का प्रथम प्रदर्शन

इस योजना के अन्तर्गत आंध्रप्रदेश सरकार के संस्कृति विभाग के सहयोग से तेलगू भाषा में दो नाटकों की रचना की गयी तथा इनका प्रथम प्रदर्शन हैदराबाद में 10 से 12 मार्च 2003 तक किया गया। प्रथम नाटक 'दर्पणम्' का निर्देशन कला तरंगिणी के के.जी. आर. गाँधी ने किया तो दूसरे नाटक 'गुणनिधि' का निर्देशन हैदराबाद के नवोदय आर्ट्स एकेडमी के डी.एस.एन. मूर्ति ने किया।

रंगमंचीय आदान-प्रदान कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के तहत, एक क्षेत्र के प्रख्यात निर्देशक को उनके समूह के साथ, अन्य क्षेत्र के रंगकर्मियों के साथ रंगमंच विषयक आदान - प्रदान करने एवं कला का प्रदर्शन करने के लिए प्रायोजित किया जाता है । यह कार्यक्रम युवा पीढ़ी के रंगकर्मियों को प्रख्यात निर्देशकों से मिलने, उनके साथ अन्योन्य क्रिया करने और उनके कार्य करने के तरीके समझने का अवसर प्रदान करने के लिए बनाया गया है। कार्यक्रम उन प्रदेशों/राज्यों में रंगमंच संबंधी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए बनाया गया जिन्हें इस अवसर से लाभ हो सकता है। अतिथि निर्देशक अपने नाटक का प्रदर्शन प्रस्तुत करते हैं और उन रंगकर्मियों से रंगमंच विषयक आदान - प्रदान करने के लिए तीन या चार दिन ठहरते हैं जिन्हें उस राज्य के विभिन्न भागों से मेंजबान एजेसी द्वारा आमंत्रित किया जाता है। राज्य के एक प्रतिष्ठित रंगमंचीय व्यक्तित्व को आदान-प्रदान सत्र का समन्वय करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। इसके अलावा मेजबान एजेंसी से स्थानीय भाषा में एक स्थानीय रंगमंच समूह का एक शो प्रस्तुत करने का अनुरोध किया जाता है। ये आदान-प्रदान कार्यक्रम संबंधित राज्य के संस्कृति विभाग या राज्य संगीत नाटक अकादेमी/ क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से भी आयोजित किए जाते हैं। रिपोर्टाधीन अवधि के दौरान इस कार्यक्रम के अन्तर्गत तीन आदान प्रदान कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसका विवरण निम्नलिखित है :

उदयपुर

उदयपुर के पश्चिम क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र एवं भारतीय लोक कला मंडल के सहयोग से 12 से 15 मई, 2002 तक प्रख्यात रंगमंच निर्देशक श्री बी0वी0 कारंत के साथ रंगमंचीय आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री भानु भारती ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

राजस्थान से आए पच्चास युवा रंगमंच कलाकारों ने इसमें भाग लिया। श्री कारंत द्वारा निर्देशित एवं बंगलौर के नेपथ्य द्वारा प्रस्तुत कन्नड़, संगीतात्मक नाटक *'गोकुल निर्गमन'* की प्रस्तुति की गयी। इसके बाद राजस्थानी में प्रस्तुत दो नाटकों श्री लायक हुसैन द्वारा निर्देशित मेवाड़ी नाटक *'चन्द्रहास'* एवं श्री सबीर खान द्वारा निर्देशित राजस्थानी नाटक *'दूधन'* का मंचन किया गया। श्री कारंत ने अपनी नाट्ययात्रा के बारे में बताया। उन्होंने प्रस्तुति प्रक्रिया एवं भारतीय रंगमंच संबंधी अपने विविध कार्य विशेषकर रंगमंचीय संगीत एवं ध्वनि के बारे में विस्तार से बताया। श्री हुसैन एवं श्री खान द्वारा प्रस्तुत किए गए नाटकों के बारे में भी श्री कारंत से विस्तृत विचार विमर्श किया गया।

नागपुर

नागपुर में 8 से 11 अप्रैल, 2002 तक प्रख्यात रंगमंच निर्देशक श्री के. एन. पनिक्कर से रंगमंच संबंधी आदान-प्रदान कार्यक्रम का आयोजन दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से किया गया। इसका समन्वय प्रख्यात नाटककार श्री महेश एलकुंचवार ने किया।

आदान-प्रदान कार्यक्रम के उद्घाटन के दिन श्री पणिक्कर द्वारा निर्देशित एवं तिरूवनन्तपुरम के 'सोपानम' द्वारा प्रस्तुत मलयालम नाटक *'कल्लूरूट्टी'* का प्रदर्शन भी किया गया था। इसके बाद, अतिथि निर्देशक के सम्मान में श्री गिरीश पांडे द्वारा निर्देशित एवं नागपुर के 'रंगरेखा' द्वारा प्रस्तुत मराठी नाटक *'सायंकालच्या कविता'* का प्रदर्शन किया गया था। श्री पणिक्कर ने संस्कृत रंगमंच से सम्बद्ध ध्वनि संस्कृति, स्पन्दन एवं प्रस्तुति प्रक्रिया के बारे में विचार-विमर्श किया। इस आदान-प्रदान कार्यक्रम में पचास युवा रंगमंच कलाकारों ने भाग लिया।

जम्मू

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत बैरी जॉन ने दिल्ली के अपने समूह इमागों के साथ 8 से 12 फरवरी, 2003 तक जम्मू का दौरा किया। उन्होंने जम्मू के अभिनव थियेटर सभागार में 8 फरवरी को अपने नाटक 'इट्स ऑल एबॉउट मनी, हनी' प्रस्तुत किया। वे जम्मू एवं कश्मीर के 50 युवा रंगकर्मियों के साथ विचारो का आदानज्ञ्प्रदान करने के लिए जम्मू में चार दिन तक रूके। बैरी जॉन ने अपनी प्रस्तुति प्रक्रिया एवं अपने कार्य के बारे में बताया। इस अवसर पर बलवंत ठाकुर (नटरंग, जम्मू) द्वारा निर्देशित डोगरी नाटक 'घुमाई' का मंचन भी किया गया। जम्मू स्थित 'जम्मू एवं कश्मीर एकेडमी ऑफ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्युजेज' इस कार्य में सहयोगी एजेंसी थी।

वाद्य यन्त्रों की प्रदर्शनी, नई दिल्ली

संगीत नाटक अकादेमी के वाद्य दर्शन प्रदर्शनी की सफलता के बाद, भारत सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय के अनुरोध पर 51 वें पाटा कान्फ्रेन्स के समय पर ही 15 से 17

अप्रैल 2002 तक अकादेमी द्वारा नई दिल्ली के अशोक होटल में वाद्ययंत्रों की प्रदर्शनी लगायी गयी थी। प्रदर्शनी में 50 फोटोग्राफ एवं अन्य दृश्य उपकरणों के साथ करीब 80 प्रदर्शनीय भारतीय वाद्य यंत्रों को सजाया गया था। अकादेमी द्वारा सचित्र सूची पत्र भी प्रकाशित किया गया था और प्रतिनिधियों के बीच वितरित किया गया था।

स्पेन में भारतीय संगीत वाद्यों की प्रदर्शनी

संगीत नाटक अकादेमी ने इस वर्ष के स्वर्ण जयंती महोत्सव के एक अंग के रूप में 'भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद', दिल्ली एवं 'यूनिवर्सिडाड डे वेल्लैडोलिड', स्पेन के सहयोग से स्पेन में 4 से 13 मार्च 2003 तक 70 वाद्य यंत्रों की प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में संगीत नाटक अकादेमी का प्रतिनिधित्व, अकादेमी के उप सचिव (फिल्म) श्री आर एस. मल्होत्रा ने किया।

इस प्रदर्शनी में भारतीय संगीत वाद्यों के विविध संसार की झाँकी प्रस्तुत की गयी जोकि देशभर के वाद्य यंत्रों में से संगीत नाटक अकादेमी के 600 वाद्ययंत्रों के संग्रह का छोटा सा हिस्सा थी।

इनका चुनाव प्राचीन काल से भारत में चले आ रहे 'चौहरे वर्गीकरण - तत वाद्य (कॉर्डोफोन), सुषिर वाद्य (ऐयरोफोन), घन वाद्य (इडियोफोन) एवं अवनद्ध वाद्य (मेंम्ब्रानोफोन) को ध्यान में रखकर किया गया था। प्रदर्शनी में क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व के सिद्धांत का ध्यान रखने की कोशिश की गयी थी। प्रदर्शनी में सजाए गए वाद्य यंत्र, विकास के इतिहास एवं विविध उदगम का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

पुतुल नाट्य का प्रोत्साहन एवं परिरक्षण

पुतुल नाट्य की प्रोत्साहन एवं परिरक्षण योजना के तहत, अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त पुतुल समूहों को अधिकतम 1.5 लाख रूपये की वित्तीय सहायता दी गयी। अकादेमी उड़ीसा में गुरू केलूचरण साहू की देखरेख मं 'रावण छाया' में एवं कर्नाटक में श्री कोग्गा कामत की देखरेख में 'गोम्बेयाट्टा में प्रशिक्षण कार्यक्रमों को भी सहायता प्रदान करती है।

छाया पुतुल नाट्य की एक परंपरा रावण-छाया पपेट थियेटर को पुन:जीवित करने के लिए संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित गुरू केलूचरण साहू की देख रेख में अकादेमी ने जनवरी, 2002 से ओडश, धनकेनल, उड़ीसा में प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है। पुतुल का निर्माण करने और रावण छाया के संगीत में प्रवीण होने समेंत इस कला को सीखने के लिए छ: विद्यार्थी चुने गए हैं।

पारम्परिक प्रदर्शन कलाओं का संवर्द्धन एवं परिरक्षण

इस योजना के अधीन संगीत नृत्य और नाट्यकला के उन रूपों में प्रशिक्षण के लिए सहायता प्रदान की जाती है, जो अब व्यापक रूप से व्यवहार में नहीं हैं। इसमें अकादेमी शिक्षकों को मानदेय और प्रशिक्षार्थियों को वजीफे देकर इन कला रूपों में उनकी रूचि सुनिश्चित करती है और परंपरागत प्रशिक्षण और अधिगम प्रक्रिया के द्वारा उन्हें बनाए रखने का प्रयत्न करती है। प्रशिक्षण के विवरण की नियमित रूप से रिपोर्ट की जाती है।

प्रशिक्षण के अतिरिक्त, इस योजना में परंपरागत कलाओं को अपना रहे परिवारों और घरानों में, उन युवा कलाकारों को सहायता प्रदान करने की भी व्यवस्था है, जिन्हें अन्यथा सामान्य रूप से सहायता प्राप्त नहीं होती है।

संगीत और नृत्य में विशेष प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय केन्द्रों की स्थापना

'विशेष प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय केंद्रों की स्थापना' योजना के अंतर्गत अकादेमी ने कूटियाट्टम और सराईकेला, मयूरभंज और पुरूलिया के छऊ नृत्यों की उन कलात्मक परंपराओं के रूप में पहचान की है, जो अब लुप्त होती जा रही हैं। अकादेमी द्वारा विद्यमान प्रशिक्षण केन्द्रों को सुदृढ़ करने के साथ साथ नए केंद्रों की स्थापना के लिए समर्थन दिया जा रहा है।

कूटियाट्टम को समर्थन

राष्ट्रीय संगीत एवं नृत्य केन्द्र की स्थापना 'योजना के अन्तर्गत अकादेमी निम्नलिखित संस्थानों को प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं प्रस्तुति सब्सिडी देती है

(क) मार्गी, तिरूवनन्तपुरम

मई 1991 से हीअकादेमी प्रशिक्षित कलाकारों को नियमित प्रस्तुति के अवसर उपलब्ध कराती आ रही है। जुलाई 2000 से पुराने नाटकों का अनुप्राणन एवं प्रस्तुतिकरण भी शुरू किया गया है। अकादेमी, कलाकारों को वार्षिक अनुदान के अलावा एक माह में दो प्रस्तुति (वर्ष में 24 प्रस्तुति) में आने वाले खर्च की पूर्ति के लिए प्रस्तुति सबिसिडी भी देती है। इस वित्त वर्ष के दौरान मार्गी तिरूवनन्तपुरम को 5,00,800 रू. की राशि प्रदान की गयी। अकादेमी अन्य एजेंसियों/ सरकार के अनुरोध पर कलाकारों का प्रायोजन भी करती है।

(ख) अम्मानूर चाचु चाक्यार स्मारक गुरूकुलम्, इरिञालकुड़ा

अकादेमी कुटियाट्टम को समर्थन देने की परियोजना के अन्तर्गत मई 1991 से ही गुरूकुलम को वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इसमें पारम्परिक गुरूकुल परम्परा की तर्ज़ पर अनौपचारित अन्तरंगता के माहौल में व्यक्तिगत प्रशिक्षण के अच्छे अंशों को शामिल करते हुए वृद्ध हो रहे गुरुओं से कूटियाट्‌टम कला का अन्तरण युवा पीढ़ी को करने की प्रक्रिया पद्धति को सुनिश्चित करने एवं उसका समर्थन करने का उद्देश्य निहित है। वित्तीय वर्ष 2002-03 के दौरान 2,85,700 रू. की राशि संस्थान को दी गयी। संस्थान ने 'शाकुंतलम्' नामक संस्कृत नाटक की प्रस्तुति की जो चार दिन में की गयी।

(ग) गुरू पी. के. नारायण नाम्बियार के मार्गदर्शन में मिषाव वादन में प्रशिक्षण, लक्किडी

मई 1991 से गुरू पी. के. नारायण नाम्बियार के मार्गदर्शन में मिषाव वादन का प्रशिक्षण भी शुरू किया गया था । गुरूओं को परिश्रमिक या वृत्ति तथा प्रशिक्षुओं को छात्रवृत्ति प्रदान करने के लिए 1,03,200 रू. की राशि का आबंटन किया गया। इस योजना के तहत कलाकारों ने अकादेमी द्वारा आयोजित विभिन्न महोत्सवों में मिषाव तयम्बक्का प्रस्तुत किया।

(घ) गुरू के. जी. नाम्बियार के मार्गदर्शन में पत्ताकम में प्रशिक्षण

गुरू पी. के. नाम्बियार के मार्गदर्शन में मिषाव वादन का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षुओं को गुरू पी.के.जी. नाम्बियार के मार्गदर्शन में पत्ताकम एवं विदूषक की भूमिका के लिए प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। श्री नाम्बियार को 2500 रू. का मासिक पारिश्रमिक (वृत्ति) दिया जा रही है। इस वित्त वर्ष में 30,000 की राशि दी गयी।

(ङ) केरल कलामंडलम, चेरूतुरूत्ती

केरल, कलामंडलम, चुरूतुरूत्ती प्रशिक्षित कलाकारों का वर्ष में 12 प्रस्तुतियों के लिए 5000 रू. प्रति प्रस्तुति की दर से वित्तीय सहायता उपलब्ध करा रही है। इस वित्तीय वर्ष के लिए 60,000 रू. की राशि दी गयी।

मयूरभंज के छऊ नृत्य को समर्थन

अकादेमी ने मयूरभंज के छऊ नृत्य को समर्थन देने की अपनी परियोजना के अन्तर्गत 1 फरवरी 2003 से बारीपदा एवं रैरंगपुर (उड़ीसा) में प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है।

अकादेमी ने 1 अक्तूबर 2001 से नृत्य एवं संगीत में प्रशिक्षित कलाकारों को लेकर अपनी रेपर्टरी की शुरुआत की है। इस परियोजना के तहत कलाकारों ने अकादेमी द्वारा आयोजित किए जा रहे महोत्सवों सहित भारत में कई स्थानों पर अपनी कला की प्रस्तुति की है। इस वित्तीय वर्ष में वृत्ति (पारिश्रमिक)/छात्रवृत्ति की मद में 10,88,524 रू0 एवं 1,73,006 रू0 की राशि दी गयी। अकादेमी ने 'चैत्र पर्व' का आयोजन करने के लिए 50,000 रू0 की राशि वित्तीय समर्थन के रूप में प्रदान की।

सराईकेला के छऊ नृत्य को समर्थन

(क)गुरू लिंगराज आचार्य, सराईकेला के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण

गुरू लिंगराज आचार्य के मार्गदर्शन में जुलाई 1998 से आचार्य छऊ नृत्य प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया था। इस वित्तीय वर्ष में गुरूओं/शिक्षको/संगतकारों को वृत्ति (पारिश्रमिक) तथा प्रशिक्षुओं को छात्रवृत्ति की मद में 2,16,116 रू0 की राशि दी गयी। इस परियोजना के तहत कलाकारों को अकादेमी द्वारा विभिन्न महोत्सवों में प्रायोजित किया जा रहा है।

(ख) सरकारी छऊ नृत्य केन्द्र, सराईकेला के समन्वय में संगीत एवं नृत्य में प्रशिक्षण

सरकारी छऊ नृत्य केन्द्र, सराईकेला के समन्वय में संगीत एवं नृत्य में प्रशिक्षण सितम्बर 1998 से शुरू किया गया। इस परियोजना के तहत कलाकारों को विभिन्न महोत्सवों में प्रायोजित किया जाता है। वित्तीय वर्ष 2002-03 में 2,92,766 रू0 की राशि दी गयी।

(ग) मुखौटा निर्माण में प्रशिक्षण

सराईकेला के छऊ नृत्य को समर्थन देने वाली अकादेमी की परियोजना के तहत दो गुरुओं श्री सुशांत कुमार महापात्र एवं श्री कन्हाई लाल महाराणा (प्रत्येक को चार प्रशिक्षु) के मार्गदर्शन में मुखौटा निर्माण में प्रशिक्षण कार्यक्रम मई 2002 से शुरू की गयी। वित्तीय वर्ष 2002-03 के दौरान 1,00,000 रू0 की राशि दी गयी।